02 / 01 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

आने वाली दुनिया के नजारों का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा सच्चे साहिब की संतान संगम युग का साहिबजादा

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ आत्मा इस श्रेष्ठ जीवन में

→ भविष्य जीवन के संस्कार धारण कर रही हूं

➳ _ ➳ इसी नशे में मैं दिव्य दृष्टि से देखती हूं

→ अपने पहले जन्म को

→ उस स्वर्ग को जो बाबा ने रचा है

→ मैं सतयुगी शहजादा हूं

→ राज्य अधिकारी शहजादा हूं

→ अपने विशाल महल में डबल ताज धारी हूं

- रंग बिरंगी लाइट से जगमगा रहा है यह महल
- सोने और हीरों से जगमगा रहा है यह महल
- दिव्य वस्त्र है मेरे..
- मैंने पहने है रूई से भी हल्के सोने के गहने...
- जिनमें जड़े है सात रंग वाले हीरे..

→ मेरी दृष्टि जाती है महल से बाहर

- दूर-दूर तक है प्रकृति का अतुलनीय सौंदर्य
- चारों तरफ सोने के जगमगाते महल
- वृक्ष फल फूल पंछी जैसे कि मेरा इंतजार कर रहे हैं कि कब मेरे मालिक मुझे कार्य में लगाएंगे
- झूलते वृक्ष झूमते वृक्ष
- वृक्ष की थिरकन से नेचुरल साज बज रहे हैं
- इतने वेराइटी पंछी
- मीठी मीठी बोली वाले पंछी
- भिन्न-भिन्न आवाजों वाले पंछी
- मेरे इशारे पर आवाज बदलने वाले पंछी
- मेरा मनोरंजन करने का इंतजार कर रहे हैं पंछी
- जैसे कि मेरा खिलौना हैं यह पंछी
- पेड़ों पर लटकते फल परी कथाओं से भी अदभुत
- कुछ है पीने वाले फल
- कुछ है खाने वाले फल
- कुछ सब्जियों के काम में आने वाले फल
- यहां है शुगर फल भी और नमक फल भी
- चारों तरफ खुशबू ही खुशबू
- दूध की बहती हुई नदियां
- नहाने के लिए नदियों में बहता सुगंधित जल
- जड़ी बूटियों के सुगंधित पहाड़ों से गुजरता हुआ जल
- वाह बाबा वाह क्या दुनिया रची है

→ मैं शहज़ादा अपनी राजधानी में विचरण करता हुआ एक विद्यालय के सामने हूँ

- गायन और साज़ो पर हो रही है पढ़ाई
- खेल और कविता के रूप में है पढ़ाई
- एक सब्जेक्ट है हिस्ट्री दूसरी है ड्रॉइंग
- हर कोई चित्रकार है होनहार चित्रकार है
- वाह बाबा वाह क्या दुनिया रची है

→ मैं शहज़ादा भ्रमण करते हुए पहुंचा एक बाजार में

- बाजार भी जैसे एक परिवार है
- ना कोई दुकानदार ना कोई ग्राहक
- सबमें है मालिकपन का भाव
- न कोई रजिस्टर.. न कोई हिसाब किताब..
- बस प्रेम की लेनदेन है
- वाह बाबा वाह क्या दुनिया रची है

→ इस साम्राज्य में चारों तरफ उमंग है उल्लास है

- मनोरंजन का साधन है नाट्यशालाएं
- हंसी मनोरंजन के नाटक हैं
- सब तरफ आनंद ही आनंद है
- सब संपन्न है सब संपूर्ण हैं
- प्रजा भी जरूरत से पदम गुना भरपूर है

- हर दिन उत्सव है
- कोई थकान नहीं है
- जागना सोना एक समान है
- सदा जागती जोत है सभी
- सभी को याद है कि हम हैं आत्मा बिंदी

→ इस दुनिया में विज्ञान की पराकाष्ठा चरम सीमा पर है

- इस पवित्र सुखधाम का सारा कारोबार

एटॉमिक एनर्जी से चल रहा है

- हर घर में विमानों की लाइन लगी है
- संकल्प शक्ति से चलने वाले विमान हैं
- आवाज की गति की गति से भी तेज चलने वाले विमान है
- वाह बाबा वाह क्या दुनिया रची है

→ मैं अपनी बुद्धि के विमान की दिशा को चेक कर रही हूँ..

- श्रीमत ही है मेरा पथ
- जिस पर चलते हुए मैंने सतयुगी संस्कार धारण कर लिये हैं
- मैं संगमयुगी साहेबज़ादा, सतयुगी शहज़ादा हूँ...